आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2394 • उदयपुर, बुधवार 14 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते हैं। कोरोना में उनका काम बंद था। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया तो उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए और ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुंचायी।

हादसे में घायल को कृत्रिम पैर लगाया

नरेश बस की प्रतीक्षा में अपने गांव पुर की सड़क के किनारे खड़ा था कि सामने से तेज रफ्तार में आते हुए ट्रक ने उसे चपेट में ले लिया, जिससे दायां पांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अस्पताल में घुटनों तक पाँव काटने के अलावा डॉक्टर्स के पास अन्य कोई विकल्प भी नहीं था। नरेश ने बताया कि वह गरीब परिवार का बी.ए. का छात्र है।

कृत्रिम पांव लगवाना भी उसके सामर्थ्य से बाहर था। कुछ ही माह पूर्व उसे नेट पर नारायण सेवा के बारे में जानकारी मिली, और यहां आने पर भीलवाड़ा जिले के तसोरिया गांव के नरेश खटीक (23) को नारायण सेवा संस्थान में कृत्रिम मोड्यूलर पैर निःशुल्क लगाया गया।

सेवा–जगत्
निःस्वार्थ सेवा, नारायण सेवा संस्थान

अनाथ 6 भाई–बहन की मदद को पहुंची नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सहयोग से माता–पिता की दुर्घटना में मौत से अनाथ हुए 6 बच्चों तक बड़गांव तहसील के कालबेलिया कच्ची बस्ती में राशन और मदद लेकर पहुंची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि पीड़ित मानवता कि सेवा में सदैव तत्पर निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने 6 अनाथ भाई–बहनों की विभिन्न साइज के कपड़े और मासिक खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, दाल, शक्कर, तेल, मसाले आदि थे, भेंट किए गए। साथ ही बच्चों एवं पड़ोसियों को विश्वास दिलाया कि भविष्य में भोजन, राशन, वस्त्रादि की हरसंभव मदद की जाएगी।

जिन्दगी जीना सिखाया संस्थान ने

मेरा नाम धमेन्द्र है जिला धौलपुर, राजस्थान से हूँ। मैं छोटा था तब मेरा पैर टेढ़ा हो गया। मतलब मेरे को चलने में प्रॉब्लम होती थी। तो फिर में नारायण सेवा संस्थान गया। वहां पर मैने ऑपरेशन करवाया, मेरा पैर सीधा हो गया। केलीपर लगा रखा ये। अब चलने में कोई दिक्कत नहीं है।

संस्थान में उसका निःशुल्क ऑपरेशन हुआ। अब धमेन्द्र आसानी से चलने लगा। वहां पर एक पैसा भी नहीं लगा। खाना–पीना– रहना नारायण सेवा संस्थान का था। यहीं पर उसने मोबाईल रिपेयरिंग का काम भी सीखा। और अपने लिये दो वक्त की रोटी का हुनर हमेशा के लिये पा लिया। वह कहता है– अब में जॉब कर रहा हूँ। आज मैं अच्छे से कमा सकता हूँ। मेरे को कोई दिक्कत नहीं हैं।

सब लोग कमाते थे, मेरे पास कुछ भी मतलब काम करने के लिये ना था तो कोई मुझे जॉब देता था। धमेन्द्र करता भी क्या? बचपन में टेढ़े हुए पैरों ने सिर्फ खिसकना सिखाया था। पर नारायण सेवा संस्थान ने उसे जिन्दगी जीना सिखाया। परिवार की खुशियां लौट आई। घरवाले भी मेरे से खुश है, धन्यवाद देता हूँ अपनी ओर से।

पटना में 48 जरुरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से 48 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किये गये। संस्थान पिछले 10 माह से उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क भोजन व राशन वितरण की सेवाए दे रहा है।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इसी क्रम में रविवार को पटना में राशन वितरण का शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, दो किलो दाल, पांच किलो चावल, दो किलो रिफाइंड तेल, चार किलो चीनी व एक किलो नमक सहित मसाले दिये गए। स्थानीय आश्रम प्रभारी संदीप जी भटनागर ने बताया कि पटना में आचार्य विमल सागर दिगंबर जैन भवन में आयोजित शिविर में उपस्थित कृष्ण प्रसाद जी, राकेश जी गुप्ता, अर्चना जी जैन, ईशान जी जैन, विजय जी जैन, सुरेंद्र जी जैन, राहुल रंजन जी, विशाल सिंह जी, गोविंद केसरी जी, रोशन जी श्रीवास्तव, संजय कुमार जी, सोनू कुमार जी, मुकेश कुमार सिंह जी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

— प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं। एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं। यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे। देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है।

नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है। एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेषीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है। एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहत फायदेमंद साबित हो सकती है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Our Religion is Humanity

संस्थान सेवा कार्य विवरण–जुलाई, 2021

क्र.सं.	सेवा कार्य	पिछले माह के आंकडे			जुलाई माह के आंकडे
01	दिव्यांग ऑपरेशन सख्या	423750			424050
02	व्हील चेयर वितरण सख्या	273253			273553
03	ट्राई साईकिल वितरण सख्या	263472			263572
04	बैसाखी वितरण सख्या	295039			295539
05	श्रवण यंत्र वितरण संख्या	55004			55004
06	सिलाई मशीन वितरण संख्या	5220			5220
07	कृत्रिम अंग वितरण संख्या	16162			16762
08	कलीपर लाभान्वित संख्या	357697			358697
09	नशामुक्ति संकल्प	37749			37749
10	नारायण रोटी पैकेट	1054400			1102400
11	अन्न वितरण (किलो में)	16380372			16385372
12	भोजन थाली वितरण रोगीयो कि संख्या	39163000			39181000
13	वस्त्र वितरण संख्या	27077320			27077320
14	स्कुल युनिफार्म वितरण सख्या	150500			150500
15	स्वेटर वितरण संख्या	135500			135500
16	कम्बल वितरण संख्या	172000			172000
17	विवाह लाभान्वित जोड़े	2109 जोड़े (35वां विवाह सम्पन्न)			2109 जोड़े
18	हैंडपम्प सख्या	49			49
19	आवासीय विद्यालय	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 95	कुल सीटे 75	अब तक लाभान्वित 455	455
20	नारायण चिल्ड्रन एकेडमी	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 277	कुल सीटे 300	अब तक लाभान्वित 821	821
21	भगवान महावीर निराश्रित बालगृह	वर्तमान में बच्चों कि संख्या 184	कुल सीटे 200	अब तक लाभान्वित 3160	3160
22	व्यवसायिक प्रशिक्षण विवरण	सिलाई कुल बैच - 51 लाभान्वित - 981	मोबाइल कुल बैच-56 लाभान्वित-891	कम्प्युटर कुल बैच -57 लाभान्वित-898	सिलाई-981 मोबाईल- 891 कम्प्युटर- 898
	कोरोना रिलीफ सेवा अब तक				
23	फूड पैकेट्स				217958
24	राशन किट				31103
25	मास्क डिस्ट्रीब्यूशन				92754
26	कोरोना दवाई किट				2923
27	एम्बुलेंस/ऑक्सीजन/हॉस्पीटल बेड				482

सम्पादकीय

कोरोना महामारी ने भारी संख्या में तबाही फैलाई है। इस दौरान अनेक लोग हमसे सदा–सदा के लिये बिछुड़ गये। बड़ी मात्रा में शारीरिक रूप से क्षति हुई है। वैज्ञानिकों, सरकारों, प्रशासनों, समाज सेवियों, सकारात्मक विचारकों तथा अंनत लोगों की शुभकामनाओं के प्रभाव से वातावरण बदलने लगा है। तन और धन की क्षति भी खूब हुई है। पर इसे पुनः अर्जित करना कठिन नहीं है। इस कालखण्ड में सर्वाधिक क्षति मन की हुई है। मन में कमजोरी के कारण भय,स्वार्थ व केवल स्वयं की चिंता का भाव ज्यादा प्रभावी हो गया है। मानव सभ्यता व भारतीय संस्कृति के पूर्व प्रमाण बताते है कि हमारी जड़ें परहित की भूमि में हैं। इसलिये परार्थ के भाव को भी पुनः सिंचित करना एक अनिवार्य कर्म है। हम सबकों तन धन के साथ मानव मन को भी सुदृढ़ करता है। हमारी सामाजिक, संरचना, हमारा धार्मिक तानाबाना, हमारी ऊँची सोच इन सबके लिये उर्वरक है। इनका उपयोग कुछेक को नहीं, हरेक को करना है। देखेंगे कि दृश्य बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ काव्यमय

मेरी अतीत
मेरी अंगुली थामकर
मुझे सुखद भविष्य तक
अवश्य ले जायेगा।
देखना जल्दी ही
मानवता पुलकित होगी,
एक दूसरे पर भरोसा,
भाईचारा,फिर
पहले जैसा हो जायेगा।

- वरदीचन्द राव

देख कोरोना सालभर में ही
तेरा समाधान ढूंढ निकाला
वैक्सीन लगवाकर भारत में
करेंगे देखो तेरा मुंह काला

अपनों से अपनी बात

सेवा बनायें दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है।

यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य– हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है।

आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

–कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति– पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा– आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूंस, कंकर –पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं–फूंस देखकर आग–बबुला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है–पतिदेव !

आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती ।

– सेवक प्रशान्त भैया

बीस वर्ष भोगी पीड़ा, अब खुश हूँ !

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियो केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है।

गोरखपुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं। उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती हूँ। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ।

घिसटकर चलना ही उनकी नियति था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉ. ए.एस. चुण्डावत ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पाँव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश उस वार्ड में गया जहां ऑपरेशन के बाद उस लड़के को रखा गया था, स्त्री भी रह रह कर रोती हुई उसके पीछे पीछे आई। एक पलंग पर वह लड़का सोया हुआ था। उसका पूरा शरीर चद्दर से ढका हुआ था। लड़का नींद के आगोश में था, उसके चेहरे की शांति देख कर कोई अनुमान तक नहीं लगा सकता था कि एक दिन पूर्व ही उसका इतना बड़ा ऑपरेशन हुआ है।

कैलाश उसके पलंग के पास खड़ा हो गया और स्त्री से बोला– देखिये माताजी, इस लड़के को देखिये, कितनी शांति से सो रहा है जैसे इसके कुछ हुआ ही नहीं हो, यह कहते हुए कैलाश ने एकदम से उसकी चद्दर उघाड़ दी। अब हाथ पांव–कटा युवक पलंग पर नजर आ रहा था, उसे देखते ही स्त्री अपना रोना भूल अवाक रह गई और सुध आते ही पूछ बैठी इसे क्या हो गया ?

कैलाश को लगा जैसे उसका कार्य सिद्ध हो गया है, उसने विजयी मुस्कान के साथ कहा कि आपके पति को थोड़ी सी लगी है जिसमें आपने रो रो कर पूरे अस्पताल को सिर पर उठा लिया है मगर इस लड़के के तो हाथ–पांव काट लिये गये हैं फिर भी देखो किस शांति से सो रहा है। कैलाश ने वापस उसे चद्दर ओढ़ा दी और स्त्री को लेकर पुनः उसके वार्ड की तरफ आगे बढ़ा।

स्त्री को जैसे झटका लग गया, रोना तो दूर उसके मुँह से एक शब्द तक नहीं निकल रहा था। कैलाश ने इस क्षण को उचित समझा, जैसे लोहा गर्म हो और हथौड़े की मार का समय हो गया हो उसी तरह कैलाश ने मार करते हुए कहा कि आप रोते रहोगे तो न तो आपके पति का और न ही अस्पताल के बाकी मरीजों का कोई भला हो पायेगा। स्त्री ने विश्वास के साथ कहा कि अब वह नहीं रोयेगी।

अंश - 60

दवा से कम नहीं डॉक्टर पर भरोसा

महामारी के दौर में डॉक्टर्स की भूमिका पूरे विश्व ने देखी, वे इसलिये समर्पण और सेवाभाव से लोगों की जान बचाने में जुटे हैं। एक जुलाई का मनाए जाने वाले 'नेशनल डॉक्टर्स डे' की थीम इस बार 'बिल्डिंग द यूचर विद फैमिली डॉक्टर' रखी गई थी। विशेषज्ञ से जानते है कि डॉक्टर्स और मरीज के बीच किस तरह का जुड़ाव होना चाहिए।

हिस्ट्री पता होती है

फैमिली डॉक्टर परिवारों की सेहत पर नजर रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। परिवार के हर सदस्य की सेहत की जानकारी रखते हुए वे ऐसा जुड़ाव पैदा करते हैं कि उन्हें 24 घंटे में से कभी देखभाल के लिए संपर्क किया जा सकता है।

अच्छे बर्ताव से कट जाती है आधी बीमारी

कहते हैं कि अच्छा डॉक्टर वह है जिसके खुशमिजाज व्यवहार को देखकर और उससे बातचीत कर मरीज की आधी बीमारी दूर हो जाए। इस स्थिति में कई बार नए व सुपर स्पेशलिटी विशेषज्ञ से ज्यादा फैमिली फिजिशियन और मरीज के बीच बना विश्वास दवाओं से भी ज्यादा काम आता है।

भरोसमंद डॉक्टर – ऐसे डॉक्टर हर प्रकार से भरोसेमंद होते है।

बच्चें लंबाई के लिए कम उम्र से करें ये आसन

कुछ बच्चों में उम्र के अनुसार लंबाई नहीं बढ़ती। ऐसे में कुछ योगासन हैं जिनको 7–8 वर्ष की उम्र से शुरू करवा दिया जाए तो बच्चों की लंबाई बढ़ने की संभावना अधिक रहती है। इनमें भुजंगासन, ताड़ासन, शीर्षासन,चक्रासन, सर्वांगासन, वृक्षासन, नटराजासन, मार्जरी आसन, सूर्य नमस्कार आदि हैं। इसको बच्चों से उनकी क्षमता के अनुसार रोज सुबह कराएं। साथ ही बच्चों को पौष्टिक आहार भी देना चाहिए।

और भी कई लाभ : इन आसनों से न केवल लंबाई बढ़ेगी बल्कि शरीर के दूषित तत्व बाहर निकलेंगे। अंतः स्रावी ग्रंथियों में सुधार होगा। रक्त संचार अच्छा रहेगा, शरीर में प्राणवायु बढ़ेगी, गर्दन, पेट और पैरों की मांसपेशियों में मजबूती के साथ लचीलापन आएगा, पाचन सही रहेगा। इसके साथ बौद्धिक स्तर भी सुधरेगा।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

प्रत्येक रविवार को शिविर और एक शिविर में माननीय कलेक्टर साहब तत्कालीन कलक्टर साहब उदयपुर के। उनके लिये महन्तजी महाराज ने मुझे कहा था कि– आप कलक्टर साहब को निवेदन कीजिये। बड़े भले आदमी हैं, वो अगले शिविर में आ जायेंगे। कलक्टर साहब के पास गये। उनकी अदालत लगी हुई थी– कलक्टर साहब की। एल्बम बताया, नमस्कार किया, प्रणाम किया। अच्छा अच्छा, अलसीगढ़ अच्छा अगले सन्डे अच्छा मैं आ जाऊंगा। अरे! मन बड़ा हर्षित हो गया। कलक्टर साहब आऐगे। कलक्टर साहब उनकी धर्मपत्नी के साथ पहुँचे। बड़े द्रवित, पांच हजार, साढ़े पांच हजार आदिवासी, वनवासी। 16 तो डॉक्टर साहब, 125 कार्यकर्त्ता।

अंगुलियाँ लगा के, मैंने अंगुलियों पे ही उनके दांतों पर मंजन लगाया। बच्चों को स्नान कराया। माननीय कलक्टर साहब प्रसन्न हो गये। जितना रुपया था बोले– कैलाशजी रखिये, अच्छा काम करते हैं। उनको रसीद दी। फिर मेरे को बोले– कैलाशजी, आपका ऑफिस कहाँ है? कार्यालय कहाँ है? उदयपुर में किस जगह है? साहब 22, पी.एण्ड टी. कॉलोनी में मेरे को एक क्वार्टर दे रखा है भारत सरकार ने, टेलीफोन विभाग ने, दूरसंचार विभाग ने। मैं वहीं रहता हूँ। नीचे एक चौक है दो– तीन गोडाऊन है। खाली पड़े रहते हैं, उसमें सामान रख देते हैं। घर पे भी रख देता हूँ। एक गैराज में दिन भर तो गाय वगैरह बैठती है। रात को तीन बजे हम साफ करते हैं। कल्पना जी सींक के झाड़ू से साफ करती है तो मैं पानी डालता हूँ।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 187 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023